खिलाडी

मित्रों आपको जिस क्षेत्र में विश्वास हो उसी में आप आगे बढ़ें। अगर आप अपने Interest के हिसाब से आगे बढ़ेंगे तो जरूर Success होंगे। आप अपने Interest के बारे में अपने Parent को बताएं और फिर Hard Work करिये, आप सफल जरूर होंगे, लेकिन जब तक आप अपना Goal तय नहीं करेंगे तो आप Success नहीं हो सकते, इसलिए आप अपना Goal तय करें और आगे बढ़ें।

रमन जब तीसरी कक्षा में था, तो प्रायः लकड़ी की हॉकी बनाकर वह अपने दोस्तों के साथ खेला करता था। इस समय रमन शारदा इंटर कॉलेज में कक्षा 7 का विद्यार्थी है।

कक्षा 7 और कक्षा 8 के विद्यार्थियों में हॉकी का मैच होना था। रमन पुराने सहपाठियों के आग्रह पर इस शर्त पर तैयार हुआ कि वह सेंटर फारवर्ड खेलेगा वह **अपना नाम ग्यारह खिलाड़ियों में लिखवाया।**

लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने उस पर नया होने के कारण एतराज जताया था। इसलिए उसे **centre-half** के स्थान पर रखा गया था। कुछ दिन बाद मैच शुरू हो गया लेकिन कक्षा 8 के लड़कों ने बड़ी फुर्ती के साथ **हाफ टाइम** तक तीन गोल कर चुके थे। **कक्षा 7 के खिलाड़ियों में बेचैनी थी।**

लेकिन रमन के खेल को देखने के बाद कक्षा 7 के अध्यापक ने अपनी नीतियां बदल दी। उधर रमन को उसके पसंदीदा स्थान पर खेलने का मौका मिला। खेल शुरू होते ही रमन को मानो हवा के पंख लग गए।

कोई कुछ समझ पाता उससे पहले ही कक्षा 8 का गोलकीपर बगले झांक रहा था, यानी कि कक्षा 8 के ऊपर एक गोल को चुका था। 15 मिनट के अंदर ही कक्षा 8 के ऊपर कक्षा 7 वाले हावी हो चुके थे।

कक्षा 7 के खिलाड़ी 4-3 से मुकाबला जीत चुके थे। अपने खेल को निखारने के प्रयास में रमन अपनी पढ़ाई का कार्य भी पूरा नहीं कर पाता था। इसलिए उसे प्रायः अपने घर वालों से डांट पड़ती थी। लेकिन रमन संतुष्ट रहता था। जिला स्तर की प्रतियोगिता थी। शारदा इंटर कॉलेज की तरफ से **सेंटर फारवर्ड** के लिए रमन का चुनाव किया गया था।

रमन अपने खेल को इतना संवार चुका था कि उसके कौशल से **Opposition** के पसीने छूट गए और शारदा इंटर कॉलेज का परचम लहरा उठा। उसकी इसी योग्यता को देखकर स्कूल प्रबंधक ने उसे खेल शिक्षक के पद पर तैनात कर दिया।

अवसर

मित्रों किसी भी चीज में हार - जीत लगी रहती है और पास - फेल भी लगा रहता है, लेकिन हार जाने पर निराश ना हों बल्कि और भी अधिक ताकत से जीतने का प्रयास करें, आप निश्चित ही Success होंगे। आज की Moral Story इसी पर आधारित है।

एक गांव में **नाग पंचमी** के शुभ अवसर पर खेल का आयोजन किया गया था। मैदान के बीच में एक खंभा गड़ा हुआ था। खम्भा एकदम चिकना और गोल था। उसके ऊपर तेल का लेप किया गया था।

10 बच्चों का समूह था। प्रत्येक को उस खंभे के ऊपर चढ़ने के लिए बारी-बारी से अवसर दिया गया था। सभी लोग प्रत्येक बच्चों का उत्साह वर्धन कर रहे थे। लेकिन फिर भी कोई भी लड़का उस खंभे के आधे भाग से ऊपर नहीं जा सका।

सबसे पीछे एक छोटे लड़के की बारी आई। पहले ही प्रयास में वह खंभे के आधे भाग तक गया लेकिन गिर गया। सभी लोग उसका मजाक उड़ाने लगे, दूसरे प्रयास में वह खंभे के ऊपरी किनारे तक पहुँच गया था, लेकिन वह फिर गिर गया। लोगों का समूह अब उसकी हौसला बढ़ाने लगे।

वह उठ कर गिरा, गिर कर उठा, पुनः प्रयास किया, परिणाम सबके सामने था। वह उस खंभे के शिखर के ऊपर था। जहां पहुँचने का स्वप्न तो सभी ने देखा था लेकिन प्रयास अधूरा किया था।